**International Journal of Hindi Research**
**www.hindijournal.com**
**ISSN: 2455-2232**
**Received: 01-01-2022, Accepted: 16-01-2022, Published: 31-01-2022**
**Volume 8, Issue 1, 2022, Page No. 26-28**

# भारतीय संस्कृति, साहित्य और समाजः कोविड–19 के परिप्रेक्ष्य में

**गीता अस्थाना**
एसोसिएट प्रोफेसर व हिन्दी विभागाध्यक्ष, ज्वाला देवी विद्या मंदिर स्नातकोत्तर महाविद्यालयए आनन्द बाग, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

**सारांश**
भारत वर्ष एक बृहद् लोकतांत्रिक देश है। यहाँ की संस्कृति वैश्विक क्षितिज पर अनेक बार अपना परचम फहरा चुकी है। भारतीय संस्कृति आध्यात्म एवं वैदिक मूल्यों एवं परम्पराओं से अनुप्राणित होने के कारण वैशिष्टयपूर्ण हैं। अपनी प्राचीनतम् विशिष्ट मूल्यों, परम्पराओं से अनुश्रूत भारतीय संस्कृति के कारण पहले भी भारत विश्वगुरू जैसे माहात्म्य से विभूषित हो चुका है। भारतीय संस्कृति का वैशिष्ट्य यहां के साहित्य व समाज का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है। श्रेष्ठतम साहित्य में भारतीय समाज की विशेषता एवं सांस्कृतिक गौरव की अभिव्यक्ति होती है। 'विश्वगुरू' भारत सदैव से ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के उदात्त एवं उदार मूल्यों की प्रतिष्ठापना करता समय–समय पर आयी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विपदाओं का सामना करते हुये अपनी श्रेष्ठतम् संस्कृति की रक्षा करता रहा है। अतः भारतीय संस्कृति और साहित्य अनुकरणीय व वन्दनीय है। कोविड –19 जैसे महामारी के बीच भी भारतीय मेधा ने अपने सास्कृतिक वैशिष्ट्य के साथ वैश्विक स्तर पर अपनी अस्मिता को गौरवान्वित किया है।

**मूल शब्दः** विशिष्ट भारतीय संस्कृति, विशिष्टतम आध्यामिक मूल्य, भारतीय पाराम्परिक गौरव का वैशिष्ट्य।

## प्रस्तावना
किसी भी राष्ट्र का अस्तित्व 'भू', 'जन' व 'संस्कृति' के वैशिष्ट्य से विद्यमान होता है। भारतीय संस्कृति 'विविधता में एकता' व समरसता के उदात्त वैदिक भावों से संप्रक्त है। महादेवी वर्मा के अनुसार 'संस्कृति' शब्द से हमें जिसका बोध होता है, वह वस्तुतः ऐसी जीवन पद्धति है, जो एक विशेष प्राकृतिक परिवेश में मानव निर्मित परिवेश सम्भव कर देती है और फिर दोनों परिवेशों की संगति में निरन्तर स्वयं आविष्कृत होती रहती है।'[1] एक विशिष्ट परिवेश में अनुशासन प्रिय एवं आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित जीवन प्रणाली ही 'संस्कृति' का पयार्य बन पड़ी है। डॉ0 रामखेलावन पाण्डेय के मतानुसार–'संस्कृति और सभ्यता वह जटिल इकाई है जिसमें ज्ञान, आस्था, कला, शील, विधि, रूढ़ि आदि मनुष्य द्वारा सहज ही ग्रहण करली जाती है। हमारा तत्व चिन्तन भी संस्कृति की इकाई है और सौन्दर्य बोध भी।"[2] भारतीय संस्कृति ज्ञान, संवेदना एवं सौन्दर्य को समाहित करती सतत् प्रवहमान वह प्रक्रिया है, जो अनवरत नवीनता व पुरातनता का सामज्जस्य स्थापित करती साहित्य, समाज व राष्ट्र के उत्थान हेतु गतिशील रहती है। भारतीय संस्कृति की विशिष्टता के सम्बन्ध में 'संस्कृति के चार अध्याय' की प्रस्तावना लिखते हुए पं0 जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि बुनियादी तौर पर संस्कृति का स्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय होता है। उसमें कुछ राष्ट्रीय तत्व भी होते हैं। विश्व की तात्विक उपलब्धियाँ 'संस्कृति' है।[3] वैश्विक परिदृश्य का पुनरावलोकन करने पर यह ज्ञात होता है कि समय–समय पर विभिन्न प्राकृतिक, भौतिक आपदाएं एवं प्रकोप आते रहते हैं जिससे विविध–राष्ट्र व उनकी राष्ट्रीय सभ्यता तथा संस्कृति का अस्तित्व ही विलुप्तप्राय हो गया। जैसे– यूनान व मिश्र देश की संस्कृति आज अतीत के पन्ने पर अंकित हैं, किन्तु भारतवर्ष अपनी सांस्कृतिक विरासत को समेटे निरन्तर विकास पथ पर अग्रसर है। भारतीय सांस्कृतिक गौरव की विशिष्टता का प्रमुख आधार है वहाँ की आध्यात्मिक व ज्ञान–विज्ञान से ओत–प्रोत 'विशिष्ट संस्कृति'। ज्ञान–विज्ञान की सामर्थ्य से समन्वित हो हम वैश्विक क्षितिज पर विविध–वैज्ञानिक एवं तकनीकी आविष्कारों के माध्यम से अपना परचम पहरा चुके हैं, वहीं आध्यात्म व नैतिकमूल्यों से संपोषित हमारी संस्कृति ने मानवता का संरक्षण करते हुए 'विश्व गुरू' पद से विभूषित हो भारतीय मेधा को पूजनीय एवं अनुकरणीय बना दिया है।

भारतवर्ष में प्रथम विश्वयुद्ध द्वितीय विश्वयुद्ध के साथ ही अनेकानेक प्राकृतिक और भौतिक आपदाएं आती रहीं। गरीबी, भूखमरी के संत्रास से संतप्त भारतीय जीवन की गाड़ी के पहियों की गति अति मद्धिम पड़ती गयी किन्तु भारतीय ऋषियों, मनीषियों एवं ग्रामदेवताओं ने अपने जीवन मूल्य नहीं छोड़े। विश्व बन्धुत्व, सत्य, अहिंसा, प्रेम–सौहार्द, नैतिकता, संयम, त्याग, दया, करूणा, स्वच्छता आदि सद्भावों व श्रेष्ठ आचरण के बल पर भारतीय प्रतिभा निरन्तर वैश्विक फलक पर अग्रणी रही है। डॉ0 विश्वनाथ प्रसाद के अनुसार–'संस्कृति' आन्तरिक गुणों का समूह है। सभ्यता जीवन की एक वैज्ञानिक पद्धति है और संस्कृति मनुष्य की उस साधना को कहते हैं जिसके द्वारा वह जीवन को सुन्दर और श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करता है। सभ्यता आधिभौतिक है, संस्कृति आध्यात्मिक।'[4] हमारी सांस्कृतिक विशिष्टता का ही प्रभाव है कि आज जब कोविड– 19 जैसी वैश्विक महामारी ने अपना पैर पसारा है तो लोग भारतीय संस्कृति की ओर आस भरी दृष्टि से देख रहे हैं। चाहे 1855 की प्लेग महामारी हो या सन् 1918 का 'स्पेनिश फ्लू या बर्ड फ्लू, सार्स, हैजा, चेचक, पोलियो, व एड्स जैसी घातक व जानलेवा बिमारियाँ सभी समय–समय पर वैश्विक फलक पर मानव जीवन की सुरक्षा हेतु एक चुनौती बन कर उभरीं। इसी क्रम में 'करोना वायरस'–19 की उत्पत्ति भी हैं जो अभी शोध एवं विवाद का विषय बना हुआ है। कुछ लोगों का मानना है कि यह वायरस चीन के बुहान राज्य के एक वैज्ञानिक अनुसंधान लैब से वैज्ञानिकों द्वारा

संक्रमित होकर चतुर्दिक अपना पैर पसार रहा है अथवा वहां के 'मांस मण्डी' से विकसित यह अत्यन्त सुदृढ़ वायरस जन जीवन को काल–कवलित कर तबाही का समंदरी सैलाब बना है। सम्भावित ऑकड़ें के आधार पर सम्पूर्ण विश्व में 58,61,377 लोग सवंमित हुए हैं जिसमें 7,62,285 लोगों की मौंते हो चुकी हैं। इसकी तुलना में भारत में यह संख्या कुछ कम है, फिर भी उसका कहर अभी कम नहीं हो रही है। बिटेन, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, रूस जैसे शक्तिशाली एवं संप्रभु देशों में जहाँ मौत की चीख सुनाई पड़ रही है वहीं सामाजिक, आर्थिक विकास की गति भी अवरूद्ध हो गयी है। ऐसे में कुछ विचारणीय प्रश्न उभरते हैं कि क्या कोरोना संकट से विश्व निजात पा सकेगा? लम्बे लॉक डाउन के बाद क्या जीवन सुरक्षित होगा? जीवन बच जाने के बाद देश की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, सामरिक व सांस्कृतिक सन्दर्भ कैसा होगा? सर्व समर्थ देशों की तबाही के बाद भी भारत जैसा विकासशील देश इस संकट को किस प्रकार नियन्त्रित कर पा रहा है? इन यक्ष प्रश्नों के समाधान के परिवार स्वरूप ही प्रस्तुत शोध पत्र की रूपरेखा अपने विस्तृत फलक पर विस्तार पाते हुए उसके निदान एवं परिणाम तक पहुँचेगी। यही इन शोध–पत्र की सार्थकता को प्रतिफलित करेंगे, जिसके अन्तर्गत क्रमशः कोविड–19 जैसे वैश्विक संकट से अपने राष्ट्र के जन–जीवन को सुरक्षित रखने हेतु अब तक क्रमशः चार लाक डाउन की व्यवस्था की गयी। शासन, प्रशासन, समाज सेवी संस्थाएँ, डाक्टर्स, वैज्ञानिक, संचार माध्यम से सम्बन्धित देश के प्रहरी सभी अपने–अपने समुचित कर्तव्यों व दायित्व बोध से अनुप्राणित हो इस संक्रमण को महामारी के रूप लेने से पूर्व ही इसे नियन्त्रित करने में प्राण–पण तत्पर हैं। किन्तु इस महामारी ने जहाँ 'जान है तो जहान है' के नारे द्वारा लोगों को एक कंक्रीट के भवन में कैद कर दिया है वहीं एक ओर जन–जीवन तबाही व भूखमरी के कगार पर पहुँच गया है तथा दूसरी ओर भौतिक संसाधनों, उद्योगधन्धों, यातायात व्यवस्था के ध्वत होने से अनेकानेक क्षति पहुंची है। सांख्यिकी मंत्रालय के अनुसार वित्तीय वर्ष 2020 की चौथी तबाही में भारत की वृद्धि दर घट कर 31प्रतिशत रह गयी। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष के अनुसार भारत की अर्थव्यवस्था 4.5 की प्रतिशत की दर से सिकुड़ जायेगी। यूरोप के आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओ.ई.सी.डी.) ने भी 2020–21 में भारत की अर्थव्यवस्था के विकास की गति का पूर्वानुमान 1.1 प्रतिशत घटा है। ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी 13.8 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्रो में 14.53 प्रतिशत तक है।[5]

कोविड–19 जैसी भयावह विपदा ने जहां मानव के सामाजिक सम्बन्धों को क्षति पहुँचायी है वहीं दूसरी ओर धनोपार्जन के मार्ग को अवरूद्ध किया है। परिणाम स्वरूप व्यक्ति में अवसाद संत्रास, भय अकर्मण्यता, आलस्य व प्रमाद व्याप्त है। लोग किंकर्तव्य विमूढ़ प्राय हो रहे हैं। शैक्षिक क्षेत्र में भी शिथिलता व्याप्त है। प्राइमरी से लेकर उच्च शिक्षा तक शिक्षा के सभी केन्द्र 'ई तकनीकी' का सहारा ले रहे हैं, किन्तु वह प्रभावशाली, उपयोगी एवं समुचित शैक्षिक विकास का माध्यम नहीं माना जा सकता, वह मात्र संकट का विकल्प बन सकता है। एक संगठन के सर्वे के अनुसार शिक्षा में 80 प्रतिशत से ज्यादा बच्चे गणित की भूलभूत क्षमताएँ भूल गये हैं। 92 प्रतिशत से ज्यादा बच्चों ने भाषाओं की मूल क्षमताओं को खो दिया है। टीमलीज एडटेक के सर्वे के अनुसार 40 से 60 प्रतिशत का नुकसान शिक्षा के क्षेत्र में हुआ है।[6]

आर्थिक क्षेत्र में एक ओर लॉकडाउन के कारण जहां उद्योगधन्धे व्यापार व बाजार में आर्थिक मंदी आयी है वहीं प्रवासी श्रमिकों के पलायन से आने वाले कुछ दिनों तक उद्योग जगत व्यापार आदि जितने भी आर्थिक स्रोत के साधक हैं सभी में अवरुद्वता परिव्याप्त होगी। सामरिक क्षेत्र में देश निर्बल व शक्तिहीन हो आत्म रक्षा हेतु मात्र प्रयत्नशील रह सकता है, न कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को सुदृढ़ कर पायेगा। सांस्कृतिक स्थिति का अवलोकन करें तो सभी धर्म व सम्प्रदाय के मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारों का कपाट सामान्य लोगों के लिए बंद हैं, मनोरंजन के सम्पूर्ण साधन कलाकेन्द्र, सिनेमा घर, थिरेटर, पिकनिक स्पॉट आदि सभी बंद हैं। अतः इस संकट के दौर में आध्यात्मिक व धार्मिक जनसभायें, सामूहिक संकीर्तन, प्रार्थना, सामूहिक यज्ञ–हवनादि बंद हैं जिससे ललित कलाओं एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का अवरूद्ध होना जन–जीवन के शारीरिक व मानसिक विकास की गति को अवरूद्ध करेंगे। साहित्यिक दृष्टि से भी देश की गति मद्धिम है। सृजनकार्य स्वतन्त्र व सुखद वातावरण का परिणाम होता है। सर्वत्र अनिश्चिता के कारण लेखन–सृजन–मौलिक चिन्तन की गति भी शिथिल है। कवि सम्मेलनों, परिचर्चा, संगोष्ठियों का आयोजन मात्र वायावीय माध्यम से हो रहे हैं जिसमें नीरसता का समावेश है।

इस प्रकार जहाँ एक ओर कोरोना महामारी ने हमारे जीवन में संकट उत्पन्न किया है वही इसका दूसरा पहलू सकारात्मक एवं श्रेष्ठ परिणामदायी है। सभी गतिविधियों के अवरूद्ध होने से लोग घरों में रह कर योग, प्राणायाम करके अपनी मानसिक व शारीरिक सुदृढ़ता को कायम कर रहे हैं, वहीं त्याग, संयम, आत्म बल तथा उत्कट परिश्रम कर संयमित जीवन जीने हेतु विवश हैं। धनाढ्य वर्ग का व्यक्ति भी इस महामारी के बीच सामाज्य वर्ग का जीवन जीता हुआ सामान्य भोजन, सामान्यश्रम एवं दिनचर्या का पालन कर रहा है। श्रम साध्य परिश्रम के साथ लोग अपनी–अपनी रूचि अनुसार कला को विकसित कर अध्ययन व स्वाध्याय को जीवनाधार बना रहे हैं। अतः समानता के साथ शैक्षिक विकास भी उनके आत्मोत्थान में सहायक हो रहा है। साथ ही भौतिक उपभोग के शून्य होने से हमारा पर्यावरण अत्यन्त शुद्ध व पवित्र हो रहा है। नदियों का जल, जहाँ प्रतिदिन कल–कारखानों का कचरा बहाया जाता था, आज विशुद्ध व निर्मल हो गया है। साथ ही आद्योगिक महानगरों में शुद्ध वायु का प्रतिशत बहुत अधिक है तथा ध्वनि प्रदूषण शून्य के बराबर है जिससे वन्यजीव, जलजीव एवं पशु पक्षी निर्द्वन्द एवं निडर होकर यत्र तन्त्र विचरण कर रहे हैं। उद्योगधन्धों के बंद होने से, शेयर बाजार लुढ़कने से या आर्थिक मंदी के कारण बेरोजगार की विपदा के मार से बचने हेतु लोग आत्मनिर्भर हो लघु व कुटीर उद्योग की ओर आस लगायें है, कृषि के क्षेत्र में उन्नति के आसार दिखायी देते हैं। कोरोना जैसे वायरस से भयभीत व्यक्ति स्वच्छता, आत्मनिर्भरता, संयम, अनुशासन, ध्यान योग पर आश्रित रहता हुआ आयुर्वेद की जड़ी बूढ़ियों द्वारा उपचारात्मक संस्कृति का विकास कर रहा है। अलबर्ट आइनस्टाइन ने कहा था – 'हर संकट के बीच महान अवसर निहित होता है।"[7] ऐसे भयावह मृत्यु के तांडव से त्रस्त अमेरिका जैसी महाशक्ति के नायक ट्रप ह्वाइट हाउस में शांति पाठ एवं 'काढ़ा' पीने की प्रेरणा दे रहे थे– ओ द्यौः शांति अंतरिक्ष शांति, पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।[8]

हमारी भारतीय संस्कृति के आचार्यों व प्रणेताओं ने तो सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव को मानवीय गुणों से समन्वित रहते हुए 'त्याग पूर्वक उपभोग करने का मंत्र दिया था।– 'ईशावास्यमिंद सर्वं यत्किंचिद जगत्यांजगत्।

तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।[9]

महात्मा गांधी ने स्वच्छता, सत्य व अहिंसा के मंत्रोच्चार द्वारा भारत की स्वतत्रंता का बिगुल फूंका था। गौतम बुद्ध व स्वामी विवेकानन्द ने तो भारतीय आध्यात्मिक व वैज्ञानिक जीवन प्रणाली का प्रचार प्रसार सम्पूर्ण विश्व की मानवता की रक्षा हेतु किया था। सतयुग में जहाँ ऋषि मुनियों ने वैदिक हवन स्तवन करते हुए कंद मूल फल का सेवन कर प्राकृतिक संरक्षण के साथ मांसाहार का निषेध किया, त्रेता में राम ने त्याग, तप, संयम के साथ रामराज की स्थापना कर मर्यादा पुरूषोत्तम हो प्रजा की रक्षा हेतु अपनी सहधर्मिणी सीता का निष्काषन किया, द्वापर में श्रीकृष्ण ने धर्म की रक्षा एवं अधर्म के विनाश हेतु महाभारत का बिगुल फूंका–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि र्भवति भारत।
उत्भ्युत्थानमर्धस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।[10]

ऐसी त्याग व तपोमय पवित्रतम भारत भूमि की संस्कृति भी स्वयं में निराली एवं श्रेष्ठ विविधताओं से ओत–प्रोत है– आज हम कोरोना के संकट में पुनः एक बार विवश हो अपनी भारतीय संस्कृति के ओर देख रहे हैं जिसका एक–एक मंत्र, पद, छंद व क्रिया–कलाप श्रेष्ठ व अनुकरणीय कार्यों, उपायों से युक्त हो। स्वामी विवेकानन्द ने तो कहा है– उठो, जागो और तब तक नही रूको, जब तक कि तुम्हें लक्ष्य न प्राप्त हो जाय।[11] भौतिकवादी विज्ञान जहाँ समाप्त होता है भारतीय आध्यात्म वहाँ से प्रारम्भ होता है। अतः भारतीय संस्कृति से अनुप्राणित समाज इस संकट के दौर में पुनः अपनी मर्यादाओं का अनुपालन करते हुए जीवन व जगत की सुरक्षा व संरक्षा कर पायेगा– ऐसा हमारा पूर्ण विश्वास है। आज आवश्यकता है मात्र अपनी भारतीय संस्कृति के उन उच्च आदर्शों, मान्यताओं, मूल्यों को अपनाने की एवं मानवता के संरक्षण की। तभी सच्चे अर्थों में हम भारतीय नागारिक के गौरव से विभूषित हो पुनः भारत वर्ष, भारतीय संस्कृति व समाज को सुरक्षित एवं संरक्षित करते हुए वैश्विक क्षितिज पर अपना परचम पहरा सकेंगे तथा विश्व को शांति व सुरक्षा का संदेश दे सकेंगे।

"अरूण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को,
मिलता एक सहारा।।[12]

**सन्दर्भ सूची**


1. डॉ0 नगेन्द्र, (1973), हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, पृ0 59.
2. गुलाटी, यश (1987), बृहत साहित्यिक निबन्ध, सूर्य प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली, पृ0 101,
3. शर्मा, मुंशी राम, (1993), हिन्दी भाषा सर्वेक्षण, ग्रंथम प्रकाशन, मेस्टन रोड़, कानपुर, पृ0 43.
4. प्रसाद, विश्वनाथ (2002), निबन्ध और निबन्ध, संजय बुक सेन्टर, वाराणसी, पृ0 32.
5. गुप्ता, शिवानी, संपादक (नवम्बर 2020) अंक, इण्डिया टुडे पत्रिका, पृ0 12, नोएड़ा, उ0प्र0।
6. गुप्ता, संजय, प्रधान संपादक– दैनिक जागरण, दैनिक समाचार पत्र (सम्पादकीय 20 अप्रैल, 2021), पृ0 5
7. प्रसाद, विश्वनाथ (2002), निबन्ध और निबन्ध, संजय बुक सेन्टर, वाराणसी, पृ0 21
8. शास्त्री, ज्ञान प्रकाश (1980) यज्ञ प्रकाश, गुरूकुल प्रकाशन ब्रह्मावर्त, कानपुर, पृ0 14
9. शास्त्री, ज्ञान प्रकाश (1980), यज्ञ प्रकाश, गुरूकुल प्रकाशन ब्रह्मावर्त, कानपुर, पृ0 32
10. प्रभूपाद, ए0सी0, भक्ति वेदान्त, (1975), श्रीमद्भगवद्गीता–याथारूप, भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट, मुम्बई, पृ0 81
11. स्वामी विवेकानन्द–एक विचार (1959), संक्षिप्त जीवनी, अद्वैत आश्रम, इण्टाली रोड, कलकत्ता, पश्चिमी बंगाल, पृ0 25.
12. प्रसाद जयशंकर (1956) कामायनी, दूसरा संस्करण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौखम्भा, वाराणसी, पृ0 8